Guest Editorial

सुनीता चौहान, फाउंडर, 4बी फाउंडेशन,दिल्ली

मेरा नाम सुनीता चौहान है। मेरा जन्म सन् 1978, 15 अगस्त को हुआ था। मेरी माताजी और मेरे पिताजी गरीब परिवार से थे। मेरे पिता के पूर्वज, स्वर्ण लोगों के खेतों, घरों, और मौहल्लों में काम करते थे। मेरी माँ और दादी गांव के ज़मींदारों के घरों में सफाई का काम कर के दो वक्त की रोटी जुटाती थीं। मेरी माता अनपढ़ थीं व पिता चौथी कक्षा तक पढ़े थे। घर की आर्थिक स्तिथि ठीक नहीं थी परंतु मेरे पिता की सोच यह थी कि मुझे किसी की ग़ुलामी नहीं करनी, और जैसे भी हो सके, सम्मान का जीवन जीना है। गांव में ऐसा कोई काम नहीं था जिसमें सम्मान का जीवन हो और अच्छा पैसा हो। दलित होने के कारण स्वर्ण लोग आगे बढ़ने भी नहीं देना चाहते थे। वे चाहते थे कि ये लोग सिर्फ हमारी ग़ुलामी करें। इसलिए मेरे पिता एक सम्मान पूर्वक जीवन जीने के लिये सन् 1983 में सह-परिवार दिल्ली आ गए। दिल्ली आकर उन्होंने कर्ज़ा लेकर एक छोटी सी झुग्गी खरीदी। बहुत समय तक मेरे पिता के पास कोई काम भी नहीं था। वे बहुत ज़्यादा कर्ज़े में डूब गए थे। बाद में उन्होंने मज़दूरी कर के हम चार बहन-भाईयों का पालन पोषण किया।

आज मैं 26 साल से दलित महिलाओं और बच्चों के अधिकारों की रक्षा हेतु काम कर रही हूँ। ख़ास तौर पे महिलाओं को घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित करने से लेके उन्हें सशक्त बनाने तक, मैंने दिल्ली महिला आयोग की तरफ से भी उनके साथ काम किया है। कई बारी तो मुझे किसी की सहायता के लिए रात को भी जाना पड़ा है तो बेझिजक गई हूँ। कई केसेज़ में, महिला वर्ग के साथ घर परिवार से लेकर पुलिस थाने, यहाँ तक की कोर्ट तक भी, उनका साथ दिया है ताकि हमारे समाज में किसी महिला और बच्चे के मौलिक अधिकारो का हनन न हो। दरअसल, बहुत साल पहले, व्यक्तिगत तौर पे, मैं खुद घरेलु हिंसा का शिकार थी। उस घुटन भरी ज़िन्दगी से धीरे-धीरे, निरंतर कोशिश करते हुए जब आगे बढ़ी तो पाया कि दलित होने के कारण समाज में ज़्यादा दिक्कतों का सामना करना पढ़ता है। गहन अध्यन के बाद यह भी पाया कि हम लोग स्वर्ण समाज और सरकार के द्वारा कितने प्रताड़ित हैं। इन्हीं सभी अनुभूतियों को लेके एक छोटे से प्रयास के अंतर्गत 'बचपन, बचाव, बढ़ना, बातचीत' (4B Foundation) नामक संस्था के साथ शिक्षा को आधार बना के समाज में काम करना शुरू कर दिया। बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर हमारी संस्था के मुख्य प्रेरणा स्त्रोत बने। हम लोग साउथ दिल्ली के कुसुमपुर पहाड़ी इलाके में काम करते हैं। मुझे गर्व है इस बात पे कि हमारे संघठन ने अपने दलित समाज के कई बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाया है। आज हम कम से कम 5000 परिवारों के साथ जुड़ कर काम कर रहे हैं और उनकी ज़िन्दगी बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

हमारी संस्था की निरंतर कोशिशों के मद्देनज़र, मुझे नेशनल फाउंडेशन फॉर इंडिया की तरफ से 2017 में सी-सुब्रमण्यम अवार्ड से सम्मानित किया गया है। कई और पुरुस्कार भी मिले हैं। पुरुस्कृत होना सिर्फ कुच्छ समय के लिए ही अच्छा लगता है क्यूंकि आज भी दलितों का जीवन कठिन है, चाहे शहर हो या गांव। बाबासाहेब चाहते थे कि समाज के सभी वर्गों का सभी क्षेत्रों में समान स्थान होना चाहिए, और सभी वर्ग के लोगों को जीवन में उपर उठने का समान अवसर मिलना चाहिए। उनके इसी सपने को साकार करने के लिए आगे का एक लम्बा रास्ता तय करना अभी बाकी है जो की हम सबको मिलकर तय करना चाहिए।